~:श्री सुकृत देवाय नमः॥:~

## स्वागत गान

आज स्वागत नित्य गुरुवर,संत शुभागम आइये।
अध्यात्मविद्या दिव्य ज्योति, सोम रस बरसाइये।
दोष दुर्गुण दूर करिके, शुद्ध हंस बनाइये।
भेद गम गति ज्ञान गर्जन, शक्ति द्वार हटाइये।
खुले द्वारा शब्द सागर, भक्त जन अन्हवाइये।
जन सदाफल विश्व शिक्षक, ज्ञान आन बचाइये।
आज स्वागत नित्य गुरुवर,संत शुभागम आइये।

## मंगल गान

विश्व शांति नाम मंगल, परम गुरु को ध्याइये।
वर्ग द्वन्द्व अशान्ति दूर कर, भाव भेद मिटाइये।
सार्व भौम समष्टि सत्ता, ध्यात्म राज्य बनाइये।
भेष भाषा भाव जगमय, ज्ञान पर दरसाइये।
समृद्धि सुख शांति धरातल, स्वर्ग भूमि बनाइये।
विश्व शिक्षक जन सदाफल, नीति स्वर अपनाइये।
विश्व शांति नाम मंगल, परम गुरू को ध्याइये।

## यज्ञ-प्रार्थना

यज्ञ रुप प्रभो हमारे, भाव उज्जवल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिये ।।१।।
वेद की बोलें ऋचाएँ, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोक सागर से तरें ।।२।।
अश्वमेधादिक रचायें, यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चला कर, लाभ दे संसार को ।।३।।
नित्य श्रद्धा भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के, सन्ताप सब हरते रहें ।।४।।
भावना मिट जाय मन से, पाप अत्याचार की।
कामनायें पूर्ण होवें, यज्ञ से नर-नारि की ।।५।।
लाभकारी हो हवन, हर जीवधारी के लिये।
वायु जल सर्वत्र हो, शुभ गन्ध को धारण किये ।।६।।
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ विस्तार हो।
इदम् मम का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो ।।७।।
हाथ जोड़ झुकाये मस्तक वंदना हम कर रहे।
नाथ करुणा रुप करुणा, आपकी सब पर रहे ।।८।।

## वन्दना

गुरु शिष्य हम प्रभु की शरण में, भक्ति अपनी दीजिये।
शीघ्र प्राकृत त्रैगुणों को, दूर हमसे कीजिये।।
शिष्य गुरु में प्रेम शान्ति, हर्ष विश्व उद्धार में।
योग-विद्या नीति बल हो, वित बल उपकार में।।
अटल निज कर्तव्य पथ में, साहस बल दिन दिन बढ़े।
जिज्ञासु होकर विश्व आवे, कर्मगति हमसे पढ़े।।
जड़लोक चेतनलोक प्रभु से, नहिं कभी अभिमान हो।
विनती सदाफल शिष्य गुरु की, प्रभु दया सन्मान हो।।
पराविद्या योग दुर्लभ, मन्त्र विश्व उद्धार का।
प्रभु गुप्त तत्व सो दीन्ह हमको, भार जग परचार का।।
अधिकार मानव जाति इसके, प्रेम धारा जिन बहा।
जिज्ञासुपन से देउँ शिक्षा, करि परीक्षा रत रहा।।
दुष्ट दुर्जन जग लुटेरे, विघ्न कर उपकार में।
अततायि बाधक राक्षसों को, क्या करूँ इस बार मै।।
इनको सुबुद्धि दे दयामय, समझ महिमा योग की।
निर्विघ्न विश्व प्रचार हो, विनती सदाफल योग की।।
पराविद्या पत्र शाखा, फूल फल विस्तार हो।
अनन्य गति फलके कोलाहल, पक्षीमय संसार हो।।
गुरु शिष्य हमको फल प्रदायिन, ज्ञान सर्व अगार हो।
जन सदाफल प्रभु शरण में, जिवन प्राण आधार हो।।
प्रभु कल्प सन्त समाज उत्तम, सर्व धर्म आचार्य हैं।
जिमि नद्य आश्रित सिन्धु के हैं,विश्व पथमय कार्य हैं।।
प्रभु सत्य सन्त समाज तेरा, आप रक्षा कीजिए।
जन 'सदाफल' ज्ञान भक्ति, वृद्धि दिन दिन कीजिए।

# आरती

जय गुरुदेव हरे सदगुरु देव हरे।
शिष्य जनन के संशय क्षण में दूर करे।।
जो शरण में आवे सतपथ पावे, मोह मिटे जीव का।
सुख शांति वे पावे, दुःखद मिटे जग का।।
तुम हंस उधारन आये, देव बाँह गहो जन की।
तुम बिन और न मेरा, प्रभु शरण गहों किनकी।।
तुम स्वामी जग तारण, शरण शरण तेरा।
प्रकृति स्वभाव मिटाओ, सहज स्वरूप मेरा।।
दीन दयाल दयामय, सन्तन सन्तपती।
भक्ति मिले अनपायनी, आरत प्रेमगती।।
सद्गुरु बन्दीछोर की, पर आरती कीजै।
चरण कमल चित्त लाइके, सब अर्पण कीजै।।
पाँच तत्व बाती बरी, जगमग उजियारा।
जगमग ज्योति प्रकाशिके, हिय गया अंधियारा।।
देव परम आराध्य हो, मम पूरण स्वामी।
जन्म सफल जन मानि हौं देहुँ भक्ति अनामी।।
परम पुरूष अनूप अविचल, परमदेव अराध्य हैं।
बिरह वर अनुरागरत, विवेक गुरुगम साध्य हैं।।
ज्ञानदीप अखण्ड ज्योति मधुर ध्वनि अनहद बजे।
धर अधर के पर सिंहासन सहज स्वर अनुभव गजे।।
दोहा- गुरु मूरति गति चन्द्रमा, सेवक नयन चकोर।
पलक पलक निरखत रहे, गुरु मूरति की ओर।।
श्वेत श्वेत मय श्वेत है, श्वेत श्वेतमय श्वेत।
तीन पाद अमृत भरा, श्वेत महानद श्वेत।।
अष्ट चक्र सब शून्य पर, धर अधरा के पार।
तहाँ 'सदाफल' घर किया, भूलि पड़ा संसार।।

# शान्ति पाठ

द्यौ शान्ति महि शान्ति हो, आप शान्ति शशि शान्ति।
औषधियों की शान्ति हो, और वनस्पति शान्ति।।१।।
विश्व देवों की शान्ति हो, अक्षर अन्तर शान्ति।
पंच शब्द की शान्ति हो, अन्तरिक्ष की शान्ति।।२।।
शान्ति समुद्र अपार है, अमित अनन्त है शान्ति।
सो स्वरूप पर शान्ति हो, सर्व शान्ति हो शान्ति।।३।।
निःअक्षर की शान्ति हो, नित्य असीम है शान्ति।
आप शान्ति सब शान्ति है, सर्व शान्तिमय शान्ति।।४।।
अज सुकृत गुरु शान्ति हो, स्वयं सिद्ध गुरु शान्ति।
अभ्यास सिद्ध गुरु शान्ति हो, परम्परा गुरु शान्ति।।५।।
सन्त अन्तरी शान्ति हो, मुक्त हंस की शान्ति।
पूर्ण ज्ञान की शान्ति हो, भक्ति महासुख शान्ति।।६।।
सहज समाधि शान्ति हो, जिवन्मुक्त की शान्ति।
दया धर्म की शान्ति हो, निज स्वरूप की शान्ति।।७।।
विराग त्याग की शान्ति हो, उदासीनता शान्ति।
सेवाजित शिष्य शान्ति हो, सत्य शान्ति हो शान्ति।।८।।
हे प्रभु शान्ति स्वरूप हो, शान्ति शान्तिमय शान्ति।
शान्ति शान्तिजन शान्ति हो, पूर्ण शान्तिमय शान्ति।।९।।
हे प्रभु शान्ति प्रदान कर, दूर हो सर्व अशान्ति।
देव सदाफल शान्तिमय,शान्ति शान्ति सुखशान्ति।।१०।।

ब्रह्मविद्या विहंगम योग संस्थान, बैंगलोर
फोन: 9972 034 934
www.vihangamyoga.org